पुण्यतिथि - 15 फरवरी

वीर-गाथा काल की स्मृति-रेखा जैसी सुभद्रा कुमारी चौहान

❑ राम अधीर

हिन्दी साहित्य के इतिहास में उसका वीर गाथा काल अत्यंत ही महत्वपूर्ण काल के रूप में रेखांकित हुआ है। इस काल में अनेक कवियों ने अपनी फुटकर और ठोस रचनाओं के माध्यम से चेतना को सुप्त नहीं होने दिया। यहाँ तक बात है कि हिन्दी में वीर-काव्य रचना की एक समृद्ध परंपरा ही चलती रही। अन्य कालखंडों में भी कवियों ने अपनी मूल चेतना से काव्य-सृजन किया। काव्य-रचनाएँ चाहे श्रृंगारिक हो या भक्ति-परक। हमारे देश की कोई भी भाषा हों सबमें सब प्रकार की काव्य-रचनाएँ हुई हैं। अनुसरण का महत्व हमारे यहाँ परम्परागत है। इसलिए हिन्दी में भी वीर-काव्य की परंपरा रही है। वीर गाथा काल को बरसों व्यतीत हो गए, लेकिन पराक्रम और शौर्य को अभिव्यक्त करने वाली रचनाएँ हमारे साहित्य में निरंतर ही होती रहीं। इसे विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए कि चाहे भूषण हों या लाल कवि अपनी वीर रचनाओं के कारण आज भी हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर हैं। हिन्दी साहित्य का इतिहास आज उतना ही महत्व रखता है जितना कि तब जब इसका सृजन बहुत ही प्रामाणिकता से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया था। आधुनिक काल में भी राष्ट्रीय भाव धारा में तेजस्वी कविताएँ रचीं गईं। इनमें पं. माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, उदयशंकर भट्ट, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्याम नारायण पांडेय, रामधारीसिंह दिनकर आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। परंतु राष्ट्र की महत्ता का वर्णन अनेक कवियों की रचनाओं में भी होता आया है। चाहे वे निराला हों या प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त तक ने ऐसी ही रचनाएँ की हैं। इसमें भी दो मत नहीं हैं कि वीरोचित भाव उत्पन्न करने वाले कवियों में स्व. गोपालसिंह नेपाली, नरेन्द्र शर्मा और पं. सोहनलाल द्विवेदी इसी भावधारा के कवि रहे हैं।

छाया : प्रहलाद कुमार

विस्मृति के गर्भ में डाल दिए जाने के कारण अनेक राष्ट्रीय भाव धारा के कवियों को स्मरण नहीं किया जा रहा है। इनमें जबलपुर की स्व. सुभद्रा कुमारी चौहान भी एक हैं। सुभद्रा जी का जन्म इलाहाबाद में नागपंचमी को एक ठाकुर परिवार में हुआ था। पिता ठाकुर रामनाथसिंह की वह लाड़ली बेटी थी। ठाकुर साहब संघर्षशील थे और इसका प्रभाव सुभद्रा जी के जीवन पर भी कमोवेश पड़ा था। गांधी जी के सानिध्य में आए खंडवा के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ इनका विवाह 1919 में हुआ था। इसमें दो मत नहीं हैं कि सुभद्रा जी में राष्ट्रीय भावना जैसे जन्मकाल से ही रही होगी। अगर उनका साहित्य पढ़ा जाए तो उनकी काव्य प्रतिभा की अनेक रंग-रेखाएँ उभरती चली जाती हैं। उनकी कविताओं में वात्सल्य, सौंदर्य-प्रेम, त्याग, समर्पण का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है, लेकिन उनकी एक रचना ने उनको अमर बना दिया और वह है झाँसी की रानी। झाँसी की रानी का बलिदान सुभद्रा जी को न केवल उद्वेलित कर गया वरन् उनकी लेखनी से एक काल-सापेक्ष रचना का जन्म हुआ। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि रानी झाँसी का जन्म काशी में 19 नवम्बर, 1835 में हुआ था और मात्र 22 वर्ष छह माह की आयु में वह बलिदानियों की सूची में अपना नाम लिखवाकर चली गईं।

ऐसा लगता है कि सुभद्रा कुमार चौहान के अंतस में रानी लक्ष्मीबाई का यह बलिदान गहराई तक बैठ गया और उनकी लेखनी एक अमर रचना की जन्मदात्री बनी। सुभद्रा जी की दो कविताएँ वीरोचित्त और बलिदानी संदर्भ की रचनाएँ हैं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और दूसरी 'वीरो का कैसा हो वसन्त'। दोनों की भावभूमि में राष्ट्र के प्रति अमिट निष्ठा, श्रद्धा का जहाँ स्वर प्रस्फुटित हुआ है, वहीं ये कविताएँ हिन्दी साहित्य के इतिहास की अनमोल धरोहर हैं। यहाँ इस बात का भी उल्लेख जरूरी है कि काव्य पक्ष का अनूठा अनुभव सुभद्रा जी को रहा होगा। फिर झाँसी की रानी कविता का छन्द ही इतना ओजपूर्ण और कारूणिकता से परिपूर्ण है कि पाठक के सामने ब्रिटिश शासकों का आततायी चेहरा उभरने लगता है। सुभद्रा जी ने इस कविता की रचना के समय ऐसा लगता है कि जैसे रानी लक्ष्मी बाई को अपने भीतर प्रतिष्ठित कर लिया होगा। इसीलिए वह कहती हैं–

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हर्षाया
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया।
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया।
लावारिस का वारिस बनने ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई वीरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

वास्तव में बुंदेलखंड की धरती, उसमें जन्मे वीरों और बलिदानियों के कारण सदियों से गर्म रही है। इसी धरती ने महान प्रतापी राजा छत्रसाल बुन्देला को भी जन्म दिया था। सुभद्रा जी की इस रचना में यह भी उद्घोषित होता है कि उन्हें तत्कालीन इतिहास का भी अच्छा ज्ञान था। साथ ही ब्रिटिश शासकों ने अपने पाँव जिन-जिन क्षेत्रों में पसारे थे उनका भी उन्हें अध्ययन रहा है। इसीलिए उनकी रचना में कथ्य की प्रामाणिकता की आहट आती है। तन-मन और प्राणों में शौर्य भाव का संचार करने वाली इस रचना में सुभद्रा जी करुणार्द्र हुई हैं तो वह रानी के बलिदानी जीवन से इतनी प्रभावित हुई कि वह बुंदेलों की गौरव-गाथा के पृष्ठ बार-बार पलटने लगीं। आज भी बुंदेलखंड के इतिहास में बुन्देले हरबोलों के मुँह की बात बार-बार दोहराई जाती है। सुभद्रा जी की इस रचना में उनके कवित्व में करुणा का भाव किस तरह से संचरित हुआ है ये पंक्तियाँ कहती हैं–

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार
किन्तु, सामने नाला आया था वह संकट विषम अपार।
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार।
रानी एक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार
घायल होकर गिरी सिंहनी, उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

इसमें दो मत नहीं हैं कि एक नारी के बलिदान-त्याग से कोई अन्य नारी करुणार्द्र और द्रवित न हो, यह संभव नहीं है। सुभद्रा जी ने किस तरह रानी के इस बलिदान पर उन्हें अपने काव्यमय श्रद्धांजलि दी। यह भी इस रचना का विशेष पक्ष है। वह कहती हैं–

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी।
हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी।
दिखा गई पथ, सिखा हमको जो सीख सिखानी थी।

अगर रानी लक्ष्मीबाई का बलिदान और राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग सदियों तक स्मरण किया जाएगा तो सुभद्रा जी की ये पंक्तियाँ भी हमारे अंतस में करुणा का भाव संचरित करती रहेंगी। जब-जब हम लक्ष्मीबाई के बलिदान की गाथा को स्मरण करेंगे, विदा की ये पंक्तियाँ हमारे भीतर आहट करती रहेंगी और हमारा स्वर सुभद्रा जी के स्वर में मिला रहेगा–

जाओ रानी याद रखेंगे, ये कृतज्ञ भारतवासी
यह तेरा बलिदान, जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी।

सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य पक्ष और उनमें समाहित वीरोचित भावनाएँ उनकी एक अन्य कविता में भी दृष्टव्य हैं। 'वीरों का कैसा हो वसन्त' भी उनकी स्मरणीय एवं उल्लेखनीय रचना है। जलिया वाला बाग में वसन्त शीर्षक यह रचना हमारे अतीत का स्मरण कराती है। सुभद्रा जी का प्रखर स्वर यहाँ करुणार्द्र होकर कहता है–

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार।
प्राची-पश्चिम, भू नभ अपार
सब पूछ रहे हैं दिग् गन्त
वीरों का कैसा हो वसंत।

कह दे अतीत अब मौन त्याग।
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ... कुरुक्षेत्र अब जाग.. जाग
बतला अपने अनुभव अनन्त
वीरों का कैसा हो वसंत...

हल्दी घाटी के शिलाखंड
ऐ... दुर्ग सिंह गढ़ के प्रचंड
राणा नाना, का कर घमंड,
दे जगा आज स्मृतियाँ ज्वलन्त
वीरों का कैसा हो वसन्त...

स्व. सुभद्रा जी के मन में अपने देश के अतीत के प्रति अत्यंत ही विनम्र और साथ ही ओजपूर्ण आस्था और विश्वास रहा है। उनकी रचनाएँ पढ़ने से लगता है कि बुन्देलखंड की माटी ने उन्हें कविता के संस्कार जन्म से दिए थे। देश प्रेम का अनुराग जितना उनकी रचनाओं में मिलता है- उतना उनके समकालीन कवियों में नहीं। आश्चर्य की बात यह है कि वीरोचित चरित्र की रचनाएँ उनके द्वारा बहुत कम रची गईं, लेकिन जो रची गईं, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। झाँसी की रानी को सुभद्रा जी की रचना ने एक अलग तरह का अमरत्व प्रदान किया है। झाँसी की रानी ने सुभद्रा जी को एक कालजयी रचनाकार का प्रमाण-पत्र दे दिया। आज हमें स्वतंत्र हुए आधी शताब्दी से भी अधिक हो गया, लेकिन हम स्वतंत्रता का सही अर्थ ही नहीं समझ सके। ऐसे क्षणों में प्रत्येक भारतवासी को रानी झाँसी रचना को अपने अंतस में उतारकर अपनी पड़ताल करने की जरूरत है।

सुभद्रा कुमार चौहान ने समाज से जिस राष्ट्र प्रेम की कल्पना की होगी उसकी आहट उनकी झाँसी की रानी और वीरों का कैसा हो वसन्त इन रचनाओं में आती ही है। आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि एक नारी के करुणाजन्य हृदय में राष्ट्र प्रेम की अजस्त्र धारा किस तरह से प्रवाहित हुई कि वह अपनी एक रचना से ही अमर हो गई। यह केवल साहित्य के लिए ही नहीं समाज के लिए भी प्रेरणास्पद है। उनका निधन 15 फरवरी, 1948 को वसंत पंचमी को हुआ था।

(लेखक संकल्प रथ के संपादक हैं।) ❖